अथवा, इतिहास की मार्क्सवादी आर्थिक व्याख्या (Marxian Eeonomic Interpretation of History) की समीक्षा कीजिए।

उत्तर—वेपर के अनुसार, "मार्क्स की गिनती विश्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक दार्शनिकों में होनी चाहिए। उसने विश्व को न केवल 16 एक नवीन क्रांतिकारी विचारधारा दी, बल्कि उस विचारधारा के द्वारा विश्व के इतिहास की दिशा भी बदल दी।"

मार्क्स साम्यवादी विचारधारा का प्रतिपादक है। जिन सिद्धांतों के द्वारा इस विचारधारा का प्रतिपादन किया गया है, उनमें से एक है, "इतिहास की व्याख्या को 'इतिहास की आर्थिक व्याख्या' के अतिरिक्त 'ऐतिहासिक भौतिकवाद" अथवा 'इतिहास की भौतिक व्याख्या' भी कहा जाता है।"

मार्क्स ने कहा कि 'इतिहास को प्रत्येक घटना का निर्धारण आर्थिक शक्तियों द्वारा ही होता है। इतिहास के सभी परिवर्तन आर्थिक शक्तियों के ही परिणाम हैं। इसे आर्थिक नियतिवाद भी कहा जाता है। इसी सिद्धांत के आधार पर मार्क्स ने कहा कि आज तक का मानव जाति का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।"

मार्क्स ने ऐतिहासिक भौतिकवाद का आरंभ इस सामान्य सत्य से किया कि, "मनुष्य को जीवित रहने के लिए भोजन आवश्यक है और भोजन प्राप्त करने के साधनों में परिवर्तन होता है, समाज का राजनीतिक और सामाजिक स्वरूप भी उसी के अनुरूप निर्धारित होता रहता है। **मार्क्स** के ही शब्दों में, "जीवन के भौतिक साधनों की उत्पादन-पद्धति सामाजिक, राजनीतिक तथा बौद्धिक जीवन की सम्पूर्ण प्रक्रिया को निर्धारित करती है।"

मार्क्स का मत था कि उत्पादन और उत्पादन के साधनों का विकास निरन्तर चलता रहता है और यह विकास तब तक चलता रहेगा, जब तक उत्पादन की सर्वश्रेष्ठ अवस्था नहीं आ जाती। यह सम्पूर्ण परिवर्तन एक ऐसी दिशा की ओर है, जिसके अन्त में समाजवादी समाज आएगा। इन्हीं मान्यताओं के आधार पर मार्क्स ने इतिहास को छः युगों में बाँटा है :

1. आदिम युग—इस युग को मार्क्स ने आदिम साम्यवादी युग कहा। मनुष्य प्रकृति की गोद में रहता था और कन्द, मूल, फल, शिकार आदि से जीवन निर्वाह करता था। निजी सम्पत्ति नहीं थी। प्रकृति पर उसका स्वामित्व था। वह एक शोषणविहीन समाज था।

2. दास युग—धीरे-धीरे जनसंख्या में वृद्धि होती गई। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती गई इसलिए उसने कृषि का विकास किया। समाज में दो वर्ग उत्पन्न हो गए। एक वर्ग जो भूमि और पशुओं का स्वामी था—वह स्वामी वर्ग बन गया और दूसरा दास वर्ग बना लिया गया। दास स्वामियों के लिए कार्य करते और स्वामी उनका शोषण करते थे। इन दोनों में संघर्ष अवश्यम्भावी बन गया।

3. सामन्तवादी युग—स्वामी और दासों में संघर्ष के परिणामस्वरूप एक नई व्यवस्था का जन्म हुआ। कालान्तर में इसमें भी दो बर्ग बन गए। एक ओर तो राजा और सामन्त, जो शासक थे और दूसरी ओर कृषक, जो कृषि करते थे तथा सामन्तों को लगान देते थे। इस तरह भूमि पर सामन्तों का स्वामित्व था। किसान तो महज श्रम ही करते थे। समाज के ये दोनों वर्ग शोषक और शोषित बन गए। इनमें भी एक 'वाद' था और दूसरा 'प्रतिवाद'। फिर दोनों में संघर्ष हुआ।

4. सामन्तों और कृषकों के बीच संघर्ष में कृषकों की विजय हुई। युग बदला। नई व्यवस्था आई। उत्पादन के साधन बदले व बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना से पूँजीपति शोषक बनें और श्रमिक शोषित। एक वाद है, दूसरा प्रतिवाद। मार्क्स ने कहा है, "वर्तमान समाज पूँजीवादी समाज है।"

मार्क्स के अनुसार, "जिस प्रकार अब तक इतिहास के अनुसार दो वर्गों शोषक और शोषित में संघर्ष होता आया है, उसी प्रकार अब भी दो वर्गों में संघर्ष होगा। जिस तरह

अब तक शोषक विजयी होते आए हैं उसी तरह अब भी शोषित अर्थात् श्रमिक विजयी होंगे।"

वेपर ने ठीक ही कहा है, "इतिहास की आर्थिक व्याख्या एक ऐसा आशावादी सिद्धांत है, जो मानव की उत्तरोत्तर प्रगति में विश्वास करता है, जिसमें अन्तिम रूप से मानव की विजय होगी।"

5. सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद—पूँजीपतियों और श्रमिकों के बीच संघर्ष के बाद जब किसी राज्य में श्रमिकों की विजय हो जाएगी तो उस समाज में सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व स्थापित होगा। पूँजीवादी वर्ग या शोषक वर्ग को सर्वथा नष्ट कर दिया जाए। सभी व्यक्ति श्रमिक रहेंगे। उत्पादन के सभी साधनों पर सम्पूर्ण समाज का स्वामित्व हो जाएगा। यह एक वर्गविहीन समाज होगा। साम्यवादियों के अनुसार, रूस, चीन तथा संसार के सभी साम्यवाद देशों मे इस समय 'सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद' है।

6. समाजवादी समाज—जब सभी राज्यों में सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व स्थापित हो जाएगा तब किसी भी राज्य में पूँजीपति या शोषक नहीं रहेंगे, सभी श्रमिक रहेंगे। तब फिर राज्य की सीमाओं की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। अतः राज्य विलुप्त हो जाएँगे और संसार में एक राज्यविहीन, वर्गविहीन समाज की स्थापना हो जाएगी। यह इतिहास की अन्तिम मंजिल होगी। यह एक सही समाजवादी समाज होगा। यह एक ऐसा समाज होगा जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करेगा तथा अपनी आवश्यकता के अनुसार प्राप्त करेगा।

इस प्रकार मार्क्स ने इतिहास की आर्थिक व्याख्या द्वारा यह सिद्ध करना चाहा कि इतिहास का प्रवाह अन्तिम समाजवादी समाज स्थापना की दिशा की ओर है। **डॉ० बी० पी० वर्मा** के अनुसार, "इतिहास में आर्थिक शक्तियों पर विशेष बल उन्नीसवीं शताब्दी की राजनीति, दर्शन और समाजशास्त्र को मार्क्स की महत्वपूर्ण देन है।"

इतिहास की आर्थिक व्याख्या की आलोचना :

1. इतिहास की निर्णायक शक्ति केवल आर्थिक तत्व ही नहीं—मार्क्स यह मानता है कि इतिहास की सभी प्रमुख घटनाओं का निर्धारण केवल आर्थिक शक्ति के द्वारा ही होता है, परन्तु यह धारणा बिल्कुल गलत है। आर्थिक शक्तियाँ इतिहास के स्वरूप का निर्धारण करने में बहुत बड़ा भाग अदा अवश्य करती हैं, किन्तु उसके अतिरिक्त अन्य शक्तियाँ भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। इतिहास के निर्धारण में धर्म का, राष्ट्रीयता का, व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं का भी कम योगदान नहीं रहा।

2. इतिहास का छः युगों में वर्गीकरण गलत—मार्क्स ने विश्व के इतिहास को छः युगों में बाँटा है। इतिहास का यह वर्गीकरण गलत है। विश्व का इतिहास मार्क्स के वर्गीकरण की पुष्टि नहीं करता।

3. उत्पादन की प्रणाली समाज का स्वरूप निर्धारित नहीं करती—मार्क्स का यह कथन कि उत्पादन की शक्तियों से उत्पादन सम्बन्ध निर्धारित होते हैं, गलत है। आज इस वैज्ञानिक युग में अमेरिका और रूस में उत्पादन के साधन लगभग समान ही हैं। दोनों ही देशों में भयंकर मशीनीकरण है। परन्तु दोनों ही समाज व्यवस्थाएँ अलग-अलग हैं। एक देश में पूँजीवाद हैं तो दूसरे में साम्यवाद। स्पष्ट है, उत्पादन की प्रणाली समान होने पर भी समाज की रचना अलग-अलग ढंग से हो सकती है। उत्पादन प्रणाली समाज का स्वरूप निर्धारित नहीं करती।

4. मार्क्स की भविष्यवाणी गलत—सोवियत रूस के नोबल पुरस्कार विजेता

साहित्यकार **सोल्जनेत्सिन** ने कहा है कि मार्क्स की सभी भविष्यवाणियाँ गलत सिद्ध हुई हैं। मार्क्स ने कहा था कि जिन-जिन देशों में पूँजीपति और मजदूरों में संघर्ष होगा और मजदूरों की विजय के साथ ही मजदूरों की तानाशाही स्थापित होगी। अर्थात् साम्यवाद पूँजीवाद के बाद की स्थिति है। परन्तु संसार में जहाँ-जहाँ साम्यवाद है वहाँ पूँजीवाद तो था ही नहीं। न रूस में, न चीन में, न ही पूर्वी यूरोप के देशों मे पूँजीवाद था। यह देश तो सीधे ही सामन्तवाद से मजदूरों की तानाशाही (साम्यवाद) की गोद में चले गए। यह स्थिति मार्क्स की भविष्यवाणी की सर्वथा प्रतिकूल है।

5. राज्यविहीन, वर्गविहीन समाज कब आएगा ?—मार्क्स राज्य को पूँजीपतियों के हाथ में शोषण का एक साधन मानता है। उसका उद्देश्य है राज्यविहीन, वर्गविहीन समाज की स्थापना। उसका कहना है कि श्रमिक-वर्ग की तानाशाही के बाद राज्य समाप्त हो जाएगा और राज्यविहीन समाज की स्थापना होगी। परन्तु हो तो यह रहा है कि साम्यवादी देशों में तो राज्य और मजबूत होता जा रहा है। कम से कम साम्यवादी देशों में तो राज्य का अस्तित्व समाप्त होने की प्रक्रिया आरम्भ होनी चाहिए थी, जबकि वहाँ राज्य और सशक्त हो रहा है। **प्रो० लॉस्की** ने कहा था कि विश्व में राज्यविहीन सरकार की स्थापना के कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं।

6. मूलभूत गलती—मार्क्स की 'इतिहास की आर्थिक व्याख्या' में एक मूलभूत गलती यह है कि मार्क्स मानता है कि राज्यविहीन, वर्गविहीन समाज की स्थापना के बाद विश्व में कोई व्यवस्था परिवर्तित नहीं होगी। क्या उस समय पदार्थ अपना मूलभूत स्वरूप बदल लेगा ? क्या उसकी अन्तर्निहित गतिशीलता बन्द हो जाएगी ? क्या उत्पादन के साधनों में और कोई परिवर्तन नहीं होंगे ? यदि पदार्थ गतिशील है तो वह गतिशील ही रहेगा और इस